कविता

अधूरा सफर

बाबु लाल. के.
II Physics

सफर था, सफर ही तो करना भा हमें भी।
हँस रही है दुनिया हमें देखकर आज।
हमें भी मिला था साय शुरु शुरु भें
किसी मोड पर, हम आज अकेले पडे है।

हमारे भी हौसले बुलन्द भे, शुरु भें
खायी थी कसम साय चलने की हर दम
झूठी कसम भी, जिये किस तरह
किया प्यार दिलसे, मिली बैंवफई ।

बढते चला सब, अकेले पडे हम;
कुछ बोले– 'बेचारा', कुछ हमें दीवाना
वे सारी तिगाहं इसती रही हमें
राम होने को श्री, हम स्वाभोरा स्वडे थे ।

तिगाहों ते दूँदा, उन्हे हर तरफ आज
इलक भी न मिली उसकी कही भीं
अगर था पता, इस दिनका पहले ही
कदम से कदम इस कभी न मिलाते

आज है वह कहीं और हम है यहीं
लुटा हुआ दिल और यकी, आस लेकर
प्यार करते चलेंगे, बाट जोहते रहेंगे
जब तक न रुके आखरी संस मैरी

कविता

अनोखी महफिल

अयषा शहीं
I Physics

मुझे लगी वह महफिल अजनबी
जब गयी मैं वहाँ पहले होकर नयी नयी
वहाँ के रंग–रूप और पढाई लिखाई
भीड मे लगी मुझे अकसर तन्हाई

धीरे धीरे चलाने लगी उठाके दम दो कदम
खोलने लगी मोटी किताब हाथ में लेक कलम
यह पदूँ वह पदूँ क्या पदूँ क्या न पदूँ
दुविधा में पड कर में तडपने लगी
तकिये के बदले किताबों को रखके सोऊँ
यह सोच वह सेच मेरी नींदें उडने लगी

एक सुबह उठकर देखती हूँ तो होती खबर
सोयी थी पिछली रात मैं किताबें के बिस्तर पर
आयी तब याद एक खास परीक्षा की
जागीं दिल में एक किरण प्रतीक्षा की

मुशिकल सवालों के जवाब लिखे बडी लगान से
मस्तिष्क जलने लगा था धबराहट की अगन से
बाहर आकर देखा यह जमीन और आसमान
मेरे इंतजार में थे सैकडों नौजवान

इम्तहान का नतीजा आया और मै आयी अव्वल
मिठाई देने मैं भागने लगी होक मैं चंचल
हाथ मिलाने, खुशी मनाने और दोस्त बनाने तडपे कई
हाय। यह कैसी महफिल है मेरी तो समझ न कुछ आई

मालूम होने लगा यह कॉलेज है न महफिल
यहाँ कुछ भी मुमकिन है लगे चाहे मुशिकल
नज़र आती है और करीब लगती है मंजिल
भगर पास पहूँचे से पहले वह होती है ओझल।

आशिकी

मोहन राज मेनोन

दिल की दीवार पे
खींची गयी तस्वीर तेरी
बहार – ए अलफ़त ने
बदल डाली तक़दीर मेरी

(दिल.....)

जाने यह क्या मुझषे गुज़रता है
कि मेरा सर से पैर तक सिहरता है
जान–ए–जान जान गया मैं तद्बीर तेरी
बहार– ए– उल्फ़न ने बदल डाली तकदीर मेरी

(दिल.....)

अश्क नहीं, अखियों से बहता है लहू
हाय। यह कैसी स्दाद है। इसे क्या (मैं) कहूँ
यार रे यार को पसन्द है तहज़र तेरी
बहार – ए उल्फ़त ने बदुल डाली तकदीर मेरी

(दिल.....)

हम पे कभी कोई कर ले यल्गार
या हमें करे कोई आके ललकार
तो काम आयेगी नज़रों की तलवार तेरी
बहार–ए उल्फ़त ने बहुत डाली तकदीर मेरी

(दिल.....)

कविता

एक सिर फिरे की बात

अविजीत ए. पी.

जिन्दगी की इस राह पर
मिलते हैं काँटे और फूल
चुन लेते हैं सब फूलें को
काँटें से रहते हैं सब दुर।

मिटा कर अक्सर खुद को
काँटे करते है रक्षा फूलों की
दुनियावालों से मिलती है नफरत
तो भी वे करते रक्षा फूलों की

लिया जनम एक ही पैधे से
काँटे और फूल दोनों ने
फिर भी एक सुन्दर और दूजा असून्दर
प्यार पाता है एक दूसरा सबसे इनकार

लगाते है सब फूलों को सीने से
और काँटों को रखते है दूर
पर ये काँटे नहीं बेवफा
असल में फूलों की चमक– दमक
निखरती है काँटों के रहने से ही।

काँटे चुभते है तो उनका क्या कसूर
वे चुभते तो उनके हाथों पर ही ज़रूर
जो करते सदा बैकार गरूर
फूलों को तोडने का करते कसूर

काँटे तो सदा ही बने रहते हैं
फूल बेचारे पल में मसल दिये जाते हैं
कहीं बेहन्तर हैं सुन्दरता से
साथ देने का विश्वास
इसलिए मानो इस सिर फिरे की बात
रखो कुध काँटें को भी फूलों के साथ